१ अक्टूबर, २०१९

साधना-मार्ग आलोकित करें, अपनी श्रेष्ठतम नियति को साकार करें

आत्मीय पाठकगण,

हम एक नई दहलीज़ को पार कर अक्टूबर माह में क़दम रख रहे हैं — वह माह जो श्रीगुरुमाई के श्रीगुरु, बाबा मुक्तानन्द को समर्पित है। हम अक्टूबर माह को प्रेम से बाबा जी का माह कहते हैं! भारत में मानसून की समाप्ति पर पड़ने वाली शरद पूर्णिमा इसी माह में आती है जोकि हिन्दू पञ्चांग के अनुसार अश्विन का माह है। यह एक दिव्य मंगलमय दिवस है जब सैंतीस वर्ष पूर्व, बाबा जी ने धरती पर अपने उद्देश्य को पूर्ण कर महासमाधि ली। वे सदा के लिए परम चिति में लीन हो गए। इस वर्ष हम इस पावन दिवस का सम्मान सौरतिथि के अनुसार, २ अक्टूबर को और चन्द्रतिथि के अनुसार, १३ अक्टूबर को करेंगे।

इस माह के दौरान हम विशेषकर बाबा जी के शिक्षाप्रद जीवन का स्मरण व उसका सम्मान करते हैं। अपनी साधना का लक्ष्य प्राप्त करने और जीवनमुक्त होने के बाद, बाबा जी ने सत्य के जिज्ञासुओं पर अपनी दिव्य कृपा की वर्षा की ताकि वे भी अपनी श्रेष्ठतम नियति को साकार कर सकें। जीवनमुक्त वे होते हैं जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया हो और जो इस मानव देह में रहते हुए भी मुक्त हो गए हों।

ऐसे महापुरुष *समस्त* मानव जाति के उत्थान के लिए अपना जीवन जीते हैं व अपनी सिखावनियाँ प्रदान करते हैं। बाबा जी और हमारी श्रीगुरु, गुरुमाई जी यह चाहती हैं कि हम अपने सच्चे स्वरूप को जानें, गहराई में समाए उस प्रेम को जानें जो हमें भगवान से जोड़ता है। वे हमारे लिए न केवल ऐसी *इच्छा* करते हैं; बल्कि वे हमें यह भी बताते हैं कि हम *किस तरह* भगवान को जान सकते हैं और उनसे जुड़ सकते हैं। यह हमारा अनुपम सद्भाग्य है कि हमें ऐसी असीम व अगाध कृपा व करुणा प्राप्त हुई है।

पन्द्रहवीं शताब्दी के सन्त-कवि कबीरदास जी कहते हैं :

> हरि कृपा तब जानिए दे मानव अवतार।
> गुरुकृपा तब जानिए मुक्त करे संसार॥
>
> यह जान लो कि मानव-जन्म हरि की कृपा से ही मिलता है।
> यह जान लो कि इस संसार में जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति, श्रीगुरु की कृपा से ही मिलती है।[१]

***

सिद्धयोग पथ पर एक तरीक़ा जिसके माध्यम से हममें से कई लोग बाबा जी के माह का उत्सव मनाते हैं वह है शक्तिपात ध्यान-शिविर में भाग लेना जो हर वर्ष बाबा जी की महासमाधि के सम्मान में आयोजित होता है। श्रीगुरुमाई के कृपापूर्ण संकल्प द्वारा, शक्तिपात ध्यान-शिविर में होने वाला आध्यात्मिक शक्ति का जागरण, हर साधक के जीवन की एक रूपान्तरणकारी घटना है। हर बार जब हम ध्यान-शिविर में भाग लेते हैं, तो अपनी आत्मा के विषय में हमारी समझ और गहरी होती है और हम अपनी साधना को आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं।

इस वर्ष ध्यान-शिविर का शीर्षक है, 'मन की शक्ति — मातृकाशक्ति' और यह विश्वभर के कई स्थानों पर १९ अक्टूबर या २० अक्टूबर को पहली बार आयोजित किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखें।

***

इस वर्ष के आरम्भ से ही, हम स्वयं को श्रीगुरुमाई के वर्ष २०१९ के सन्देश और *मधुर सरप्राइज़* २०१९ में प्रदान की गई उनकी सिखावनियों के अध्ययन में निमग्न करते आए हैं। हर माह हमने इनमें से एक सिखावनी पर केन्द्रण किया है। अक्टूबर माह के लिए इस पत्र को लिखने की तैयारी करते समय एक विशेष सिखावनी मेरे अन्तर में बार-बार उभर रही थी। मुझे कुतूहल हुआ कि ऐसा क्यों हो रहा है? फिर मैंने महसूस किया कि मुझे यह इसलिए याद दिलाई जा रही है क्योंकि यह सिखावनी मेरी अपनी साधना के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि मैंने पहले भी मई माह के पत्र में इसके बारे में चर्चा की है, परन्तु मैं एक बार फिर इसके बारे में आपको बताना चाहती हूँ। मेरे विचार में, इस वर्ष के इन अन्तिम महीनों में श्रीगुरुमाई के सन्देश के अपने अध्ययन को जारी रखते हुए हमें इस सिखावनी पर अधिक मनन करना चाहिए।

अपने प्रवचन में, श्रीगुरुमाई हमें "सही प्रयत्न" करने और उसे बार-बार करते रहने के लिए मार्गदर्शित करती हैं ताकि हमारे मन को उसके अपने प्रकाश की ओर मुड़ने में सम्बल मिल सके। श्रीगुरुमाई हमें सिखाती हैं कि "सही प्रयत्न" क्या है और इस तरह का प्रयत्न *कैसे* किया जाए। जब मैंने श्रीगुरुमाई के प्रवचन को सुनते हुए एक बार फिर इस सिखावनी पर केन्द्रण और मनन-चिन्तन किया, तो यह स्फटिक के समान स्पष्ट हो गया कि साधना में प्रगति करने में, साधना में अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने में यह एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मुझे सचमुच यह समझना चाहिए कि किसी भी क्षण में सही प्रयत्न क्या है और यह

सीखना चाहिए कि अपनी आध्यात्मिक खोज को फलदायी बनाने के लिए सही प्रयत्न किस तरह किया जाए।

क्या आपकी साधना में ऐसे क्षण आए हैं जब आपने सोचा हो, "मैं इतने सारे प्रयत्न कर रहा हूँ; मैं अपने अभ्यासों को करने के लिए कितना कठोर परिश्रम कर रहा हूँ। फिर भी मैं आगे क्यों नहीं बढ़ पा रहा?" मुझे ऐसे अनेक क्षण याद हैं जब पूरे समय कठिन परिश्रम करने के बावजूद भी मैंने महसूस किया कि मैं वहीं की वहीं हूँ। *मधुर सरप्राइज़* में श्रीगुरुमाई की सिखावनी ने मुझे सही प्रयत्न *कैसे* किया जाए, इसके महत्त्व के बारे में समझाया। हम अक़्सर *सही* प्रयत्न को *कठोर* प्रयत्न समझ लेने की गलती करते हैं। जब हम साधना के लक्ष्य को साकार करने के लिए आवश्यक, सही प्रयत्न की प्रकृति व उसके सम्पूर्ण महत्त्व को समझकर उस पर कार्य करते हैं तो हम अपने मन को अपना मित्र बना पाते हैं और उसे उसकी अपनी प्रभा की ओर ले जा पाते हैं। इस सिखावनी की अपनी समझ को गहरा करने के लिए, आप चाहें तो एक बार फिर मधुर सरप्राइज़ में भाग ले सकते हैं जो अभी भी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

***

श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अधिक गहराई से अध्ययन करते समय, इस माह सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर आनन्द लेने व कार्य करने के लिए कई विशिष्ट पोस्ट उपलब्ध होंगे। ये पोस्ट हमें विशेष उत्सवों के बारे में सीखने का एक सुअवसर भी प्रदान करते हैं। इनमें से कुछ के बारे में आपको बताते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है :

- बाबा जी की महासमाधि — यहाँ आपको बाबा जी की सिखावनियों, उनके दर्शन व प्रज्ञान व बहुत-सी अन्य चीज़ों के रूप में कई अद्‌भुत ख़ज़ाने मिलेंगे।
- बाबा-चन्द्र की छवियाँ — वेबसाइट पर यह एक पसन्दीदा पोस्ट है, जिसमें विश्वभर के सिद्धयोगियों द्वारा भेजी जाने वाली बढ़ते हुए चन्द्रमा की और बाबा जी के पूर्ण चन्द्र की तस्वीरें दिखाई जाती हैं ताकि सभी इसका आनन्द ले सकें। अंग्रेज़ी पृष्ठ पर आप यह भी जान सकते हैं कि आप जहाँ रहते हैं वहाँ से आप चन्द्रमा की तस्वीरें कैसे भेज सकते हैं।
- श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश पर मनन — यह नया पोस्ट *मधुर सरप्राइज़* २०१९ से लेखक द्वारा चुनी गई किसी एक सिखावनी पर उनके अन्वेषण को प्रस्तुत करता है।

- विश्व की विभिन्न परम्पराओं से ली गई कहानियाँ जो श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश के हमारे अध्ययन को सम्बल प्रदान करती हैं।
- अभ्यास-पत्र # ३६ — श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश के साथ आपके कार्य को सम्बल प्रदान करने के लिए अभ्यास-पुस्तिका के अन्तर्गत यह अन्तिम अभ्यास-पत्र होगा।
- सितम्बर में ध्यान-सत्रों का समापन हो गया है; फिर भी आप अब भी इस वर्ष के किसी एक या सभी सत्रों के लिए पंजीकरण करा सकते हैं।

इस माह में कई ऐसे त्यौहार हैं जिनका हम उत्सव मनाएँगे।

- नवरात्रि — भगवती देवी को समर्पित यह त्यौहार, २९ सितम्बर को आरम्भ हुआ है और यह ६ अक्टूबर तक चलेगा [भारत में ७ अक्टूबर]। श्री मुक्तानन्द आश्रम में, नवरात्रि की हर रात्रि को विशेष पूजा होगी जिसमें महादुर्गा, महालक्ष्मी व महासरस्वती के रूप में भगवती देवी की आराधना की जाएगी। नवरात्रि के उपलक्ष्य में वेबसाइट पर कई विशेष पोस्ट आएँगी, जिनमें पूजा की तस्वीरें, पूजा में उपयोग की जाने वाली सामग्री के महत्त्व पर लेख और भगवती देवी के विभिन्न स्वरूपों पर ध्यान की रिकॉर्डिंग सम्मिलित है। आप जहाँ कहीं भी हैं, वहाँ से इस उत्सव में भाग लेने के विषय में अधिक जानकारी हेतु अंग्रेज़ी पृष्ठ देखें, उदाहरण के लिए, आप एक संकल्प बनाएँ और देवी को अर्पित की जाने वाली 'जय देवी आरती' के शब्द सीखें।
- दशहरा — नवरात्रि की समाप्ति पर हिन्दू पञ्चांग के अनुसार, अश्विन माह की दशमी तिथि पर दशहरे का त्यौहार मनाया जाता है। इसे विजयादशमी भी कहा जाता है यानी वह विजय जो माह की दशमी तिथि को प्राप्त हुई। लंका के युद्धक्षेत्र में राक्षसराज रावण पर भगवान राम की इस विजयगाथा का वर्णन महाकाव्य रामायण में मिलता है। इस वर्ष दशहरा, अमरीका में ७ अक्टूबर को और भारत में ८ अक्टूबर को मनाया जाएगा।
- दिवाली — यह दीपों का त्यौहार है। जैसा कि रामायण में बताया गया है, यह पर्व चौदह वर्ष का वनवास समाप्त कर, भगवान राम के अपने राज्य अयोध्या लौटने की खुशी में मनाया जाता है। अमावस की रात होने के कारण अयोध्या की प्रजा ने अपने परमप्रिय भगवान राम के पथ को प्रकाश से भरने के लिए पूरे मार्ग में दिये जलाए थे। हर वर्ष हिन्दू पञ्चांग के अनुसार, कार्तिक माह की अमावस्या पर भारत के लोग भगवान राम के लौटने के अवसर पर अपने घरों के अन्दर व बाहर दिये जलाते हैं; लोग अपने घरों में देवी लक्ष्मी को आमन्त्रित करने के लिए भी ऐसा करते हैं — ठीक वैसे ही जैसे भगवान राम के अयोध्या लौटने व राजा बनने पर हर घर में प्रचुरता व आनन्द का आगमन हुआ था। कार्तिक माह की अमावस्या इस वर्ष २७ अक्टूबर को है।

दिवाली के उत्सव का आरम्भ २४ अक्टूबर को गोवत्स पूजा से होगा [भारत में यह २५ अक्टूबर को है] और इसका समापन २८ अक्टूबर को बलि प्रतिपदा से होगा, जिसे उत्तर भारत में भारतीय नववर्ष के रूप में मनाया जाता है।

***

इतने सारे त्यौहारों के बीच, शक्तिपात ध्यान-शिविर में स्वयं को निमग्न करते समय और अक्टूबर माह में हरेक उत्सव को मानते समय, "सही प्रयत्न" करना याद रखें। आप अपने मन को उसके उज्ज्वल प्रकाश से जगमगाता हुआ देखने के मधुर फल का आनन्द लें, ऐसी शुभकामना!

मैं उर्दू भाषा में लिखे अपने इस शेर के साथ आपसे विदा लेती हूँ। इसमें मैं यह बताना चाहती हूँ कि श्रीगुरुमाई की कृपा प्राप्त करने और साधना-मार्ग पर चलने से पहले एक साधक का जीवन — मेरा जीवन — कैसा था और उसके बाद कैसा हो गया है। मुझे लगता है कि आपमें से कई लोगों के जीवन में भी यह रूपान्तरण हुआ होगा।

जो हमारे वजूद से भी अनजान हुआ करते थे,
आज पूछते हैं पता तेरा हमसे टकरा जाने पर।

आदर सहित,

गरिमा बोरवणकर

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन